अहिंसा यात्रा प्रेस विज्ञप्ति

'ईश्वर के घर' केरल में तेरापंथ के 'ईश' का मंगल पदार्पण

-अहिंसा यात्रा संग महातपस्वी महाश्रमण ने सोलहवें राज्य में किया पावन प्रवेश

-भव्य और पारंपरिक रूप से केरलवासियों ने अपने आराध्य का किया अभिनन्दन

-लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री पहुंचे मंगलाथन चल्ला गांव

-साई निलयम इंग्लिश मीडियम हाइस्कूल से आचार्यश्री ने केरल में दी अपनी प्रथम देषणा

20.02.2019 मंगलाथनचल्ला, पालाक्कड (केरल): दो सुकोमल कदम एक दृढ़ संकल्पी आचार्य का साहचर्य पाकर न जाने कितने कीर्तिमानों का सृजन करते हुए नेपाल, भूटान की विदेशी धरती को मापने के उपरान्त भारत के विभिन्न राज्यों, अनेक ऐतिहासिक और पौराणिक नदियों, जंगल, पहाड़, अनेकानेक नगरों, महानगरों, शहरों, कस्बों और गांवों को मापते हुए और मानवता का शंखनाद करते हुए ज्योतिचरण के रूप में स्थापित हुए। इन दो सुकोमल चरणों ने कभी हिमालय की चोटियों पर आरोहण किया तो कभी भारत की सबसे पवित्र नदी के रूप में स्थापित गंगा के मैदानी क्षेत्रों से होते हुए पूर्वोत्तर भारत की ओर बढ़े। वहां ब्रह्मपुत्र महानद को पार कर असम, मेघालय के बीहड़ तथा घाटियों को पार किया। पूर्व भारत की ओर बढ़े तो कभी महानदी के तीरे-तीरे तो कभी कृष्णा, कावेरी, गोदावरी के किनारे-किनारे चलते हुए दक्षिण भारत की ओर बढ़े। बंगाल की खाड़ी के अति सन्निकट से होते हुए एक और नवीन इतिहास के सृजन के लिए भारत के दक्षिण भाग में अपनी नैसर्गिकता के विख्यात, अरब सागर के किनारे अवस्थित 'ईश्वर का अपना घर' कहे जाने वाले प्रदेश केरल की धरती पर पड़े तो मानों पूरा प्रदेश की इन दो ज्योतिचरणों से ज्योतित हो उठा। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के देदीप्यमान महासूर्य, अखण्ड परिव्राजक, महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी के ज्योतिचरण बुधवार को प्रातः लगभग 8.01 बजे केरल की धरती पर पड़े तो एक नवीन इतिहास का सृजन हुआ। अपनी अहिंसा यात्रा के साथ 9 नवम्बर 2014 को दिल्ली के लालकिले से निकले अहिंसा यात्रा प्रणेता ने अपनी अहिंसा यात्रा के साथ देश के सोलहवें राज्य में प्रवेश किया। प्रवेश के अवसर पर साधु-साध्वियां पंक्तिबद्ध होकर आचार्यश्री के नेतृत्व में केरल राज्य में गतिमान हुए। केरल के विभिन्न क्षेत्रों मंे रहने वाले श्रद्धालुओं ने पारंपरिक वाद्ययंत्रों आदि के साथ उपस्थित होकर अपने आराध्य व उनकी धवल सेना का भावभीना अभिनन्दन किया।

इसके पूर्व आचार्यश्री ने धनलक्ष्मी श्रीनिवासन काॅलेज आॅफ इंजीनियरिंग के परिसर से प्रस्थान किया और कुछ किलोमीटर की दूरी तय करते ही तमिलनाडु व केरल राज्य की सीमा पधारे। शुभ मुहूर्त में आचार्यश्री ने मंगल मंत्रों का उच्चारण कर केरल की धरती पर गतिमान हुए। लगभग ग्यारह किलोमीटर का विहार कर आचार्यश्री केरल राज्य के पालाक्कड जिले में स्थित मंगलाथन चल्ला गांव स्थित साई निलयम इंग्लिश मीडियम हाइस्कूल में पधारे।

यहां आयोजित मंगल प्रवचन कार्यक्रम में आचार्यश्री ने लोगों को पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आदमी को अपने जीवन में कत्र्तव्यों के प्रति जागरूक रहने का प्रयास करना चाहिए। कत्र्तव्यों का पालन से समाज और देश भी अच्छा बन सकता है। कत्र्तव्यों का सही पालन तब हो सकता है जब जन-जन में ईमानदारी हो। चोरी, बेईमानी आदि का भाव आदमी को अपने कत्र्तव्यों से च्यूत कर देता है। आदमी को कत्र्तव्य च्यूति से बचने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने केरल प्रवेश के संदर्भ में मंगल उद्बोध प्रदान करते हुए जन-जन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के भावों के विकास की मंगलकामना की। केरल प्रवेश के संदर्भ में आचार्यश्री ने स्वरचित गीत का संगान किया। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी ने पावन संबोध प्रदान करने के साथ आचार्यश्री के केरल पदार्पण के संदर्भ में स्वरचित पद्यों को पाठ किया। अहिंसा यात्रा प्रवक्ता मुनि कुमारश्रमणजी ने भी अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। कालीकट सभा के अध्यक्ष श्री राजकुमार बाफना, कोच्चीन सभा के मंत्री श्री दीपक कोठारी व ईरोड अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति के स्वागताध्यक्ष श्री नरेन्द्र नखत ने अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी। कालीकट और कोच्चीन महिला मण्डल ने अपने-अपने गीतों और प्रस्तुतियों के माध्यम से आचार्यश्री की अभिवन्दना की। स्कूल के प्रिंसिपल श्री षट गोपाल ने भी आचार्यश्री का अपने स्कूल में आगमन हेतु स्वागत करते हुए अपनी हर्षाभिव्यक्ति दी।